इकाई –1

शिवराजविजयः (प्रथमनिश्वासः)

अम्बिकादत्त व्यास की गद्यशैली का वैशिष्ट्य, प्रथम निश्वास के अनुसार तत्कालीन भारतवर्ष की दशा का वर्णन, पात्रों का चरित्र–चित्रण

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

पं. अम्बिकादत्त व्यास 'अभिनव बाण' के रूप में तथा उनका काव्य 'शिवराजविजय' संस्कृत के प्रथम उपन्यास के रूप में ख्यात है। प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से छात्र जहाँ इस 'अभिनवबाणभट्ट' की गद्य शैली से परिचित हो सकेंगे, वहीं उन्हें शिवराजविजय में प्रतिबिम्बित तत्कालीन भारतवर्ष की दशा का भी ज्ञान हो सकेगा। साथ ही शिवराजविजय में चित्रित शिवाजी, गौरसिंह, श्यामसिंह आदि के चरित्र के द्वारा छात्र राष्ट्रभक्ति, स्वाभिमान, आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, स्वधर्मानुराग आदि मूल्यों की ओर प्रेरित हो पायेंगे।

1.1 प्रस्तावना

शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है, इसमें वर्णित कथा ऐतिहासिक है, किन्तु व्यास जी ने अपनी प्रतिभा और कल्पना के सहारे उसे उच्च कोटि की साहित्यिकता प्रदान कर दी है। कथा अधिकांश रूप में मौलिक होते हुये भी उसमें साहित्यिक कल्पना का समावेश है। इसमें कथा वस्तु की संघटना प्राच्य और पाश्चात्य शिल्प के समन्वय

से की गई है। यद्यपि इसमें दो स्वतन्त्र धाराएँ समानान्तर रूप से प्रवाहित होती हैं-एक के नायक शिवाजी हैं, तो दूसरी के नायक रघुवीरसिंह हैं, तथापि ये एक दूसरे से पूर्ण स्वतन्त्र और निरपेक्ष नहीं, एक दूसरे के पूरक हैं। एक का महत्त्व दूसरे से उद्‌भासित होता है। अत: दोनों परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। कथा में इतना प्रवाह और सम्प्रेषणीयता है कि पाठक की आकांक्षा उत्तरोत्तर वृद्धिगत होती जाती है। शिवराजविजय की सम्पूर्ण कथा तीन विरामों में समाहित है। प्रत्येक विराम में चार निश्वास हैं।

व्यास जी के शिवराजविजय में इतिहास और कल्पना, आदर्श और यथार्थ अनुभव और कल्पना का सुन्दर समन्वय है। उनके सभी पात्र अपने चरित्र-निर्वाह में पूरी तरह से खरे उतरते हैं। वीर शिवाजी, गौरसिंह, रघुवीरसिंह, यशवन्तसिंह, अफजलखाँ, शाइस्तखाँ तथा ब्रह्मचारी आदि सदा अपनी स्वाभाविकता और यथार्थता का निर्वाह करते हैं। उसमें न कहीं अतिशयता है और न कहीं न्यूनता या अस्पष्टता।

शिवराजविजय वीररस प्रधान काव्य है तथापि उपकारी रूप में सभी रसों का चित्रण है। व्यास जी ने अलंकार विधान में सदैव सजगता दिखाई है। यद्यपि इनका वर्णन कहीं पर अनलंकृत नहीं है, तथापि अनावश्यक अलंकार भार से बोझिल भी नहीं है।

गद्यकारों में सर्वाधिक अलंकार विधान बाण ने किया है। यदि इस क्षेत्र में उनके साथ व्यास जी को देखा जाय तो अन्तर यह दिखेगा कि इनकी कृति अनपेक्षित अलंकार भार से बोझिल नहीं है।

शिवराजविजय की शैली अत्यन्त सरल, सरस तथा प्रवाहमयी है। भाषा की सरलता और भाव की उत्कृष्टता का समन्वय ही कवि की प्रमुख विशेषता होती है। कविकथ्य जितना ही सरल और सुन्दर ढङ्ग से कहा जाय, काव्य उतना ही हृदयग्राही और 'सद्य: परनिर्वृत्तये' की भावना को प्राप्त करने वाला होता है।

अस्तु 'शिवराजविजय' भाषा और भाव- दोनों ही दृष्टि से एक उत्तम कोटि का काव्य कहा जा सकता है। इसमें प्रतिभा की प्रौढ़ता, कल्पना की सूक्ष्मता, अनुभव की गहनता, अभिव्यक्ति की स्पष्टता, भावों की यथार्थता और रमणीयता, पदावलियों की मधुरता, कथानक की प्रवाहमयता, आदर्श की स्थापना, शिव की भावना और सुन्दर की सुन्दरता निहित है। उपन्यास की दृष्टि से भी यह कथानक, पात्र, घटना, संवाद, अन्तर्द्वन्द्व, आकांक्षा आदि तत्त्वों से पूर्ण है और **'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'** की कसौटी पर खरा उतरता है।

1.2 अम्बिकादत्त व्यास की गद्यशैली का वैशिष्ट्य

भाषा शैली- मनोगत भावों को परहृदय-संवेद्य बनाने का प्रमुख साधन भाषा है और भाषा की क्रमबद्धता या रचना-विधान को ही सम्भवत: शैली भी कहा जाता है। अत: सामान्यत: भाषा-शैली ऐसा प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। इस आधार के साथ यह कहा जा सकता है कि काव्य में मनोगत भावों को मूर्त रूप प्रदान करने का प्रमुख एवं सहज साधन 'शैली' है। **'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'** के परिप्रेक्ष्य में यदि अर्थ काव्य की आत्मा है तो शब्द अर्थात् शैली काव्य का शरीर। अत: भाव की मनोहरता, स्थिरता और सूक्ष्मता शैली पर ही निर्भर होती है।

डॉ. श्यामसुन्दर दास के अनुसार किसी कवि या लेखक की शब्द योजना, वाक्यांशों के प्रयोग, उसकी बनावट और ध्वनि आदि का नाम ही शैली है। दण्डी ने काव्यादर्श में- **'अस्त्यनेको गिरामार्ग: सूक्ष्मभेदपरस्परम्'** कहा है।

1.2.1 रीति चातुर्विध्य

इन भावनाओं के अनुसार स्थूलत: शैली के दो भेद किये जाते हैं- (1) समास शैली (2) व्यास शैली। विद्वानों ने मार्ग (शैली) को चार प्रकार का माना है। किन्तु अनन्तर काल में इन्हें शैली न कहकर रीतियाँ कहा जाने लगा है। ये रीतियाँ चार हैं- (1) वैदर्भी, (2) गौडी, (3) पाञ्चाली और (4) लाटी।

(1) कोमल वर्णों वाली और असमासा अथवा अल्पसमासा, माधुर्यपूर्ण रचना **वैदर्भी** रीति है।

(2) महाप्राण-घोषवर्णा, ओजगुणसम्पन्ना तथा समास-बहुला रचना **गौडी** है।

(3) वैदर्भी और गौडी का सम्मिश्रण **पाञ्चाली** रीति है।

(4) वैदर्भी और पाञ्चाली का सम्मिश्रण **लाटी** रीति है।

शिवराजविजय की भाषा सरल, सुबोध एवं स्पष्ट है। पदावलियों के प्रयोग वर्ण्य विषय के अनुसार होने चाहिये। एक ही विधा प्रत्येक वर्णन को प्रभावमय नहीं बना सकती और व्यास जी ने ऐसा ही किया है। अत: कहा जा सकता है कि शिवराजविजय में उचित शब्दावलियों का प्रयोग, अर्थपूर्ण वाक्यविन्यास तथा अवसर के अनुकूल कोमल तथा कठोर वर्णों का प्रयोग किया गया है।

व्यास जी ने अवसर के अनुकूल एक ओर दीर्घ-समास-बहुला पदावली का प्रयोग किया है तो, दूसरी ओर सरल लघु-पदावली का। पूर्वोक्त रीतियों के सन्दर्भ में शिवराजविजय में व्यास जी ने पाञ्चाली रीति का आश्रय लिया है। इनके साक्ष्य में तथ्य द्रष्टव्य हैं- अफजल खाँ के शिविर का वर्णन करते हुए व्यास जी समस्त (दीर्घ) पदावली में कहते हैं-

'इतस्तु स्वतन्त्र यवनकुल-भुज्यमान-विजयपुराधीश-प्रेषित:पुण्यनगरस्य-समीपे एव प्रक्षालितगण्डशैल-मण्डलाया: निर्झरवारिधारा-पूर-पूरित-प्रबल-प्रवाहाया:, पश्चिम-पारावार-प्रान्तप्रसूत-गिरि ग्राम-गुहा गर्भ-निर्गताया अपि प्राच्य-पयोनिधि-चुम्बनचञ्चुराया:, रिङ्गत्-तरङ्गभङ्गोद्भूतावर्तशत-भीमाया: भीमाया नद्या:, अनवरत-निपतद्-वकुल कुल-कुसुम-कदम्ब-सुरभीकृतमपि नीरमवगाहमान-मत्त-मतङ्गज-मद-धाराभि: कटूकुर्वन्; हय हेषा-ध्वनि-प्रतिध्वनि-वधिरीकृत-गव्यूति-मध्यगाध्वनीन वर्ग:, पट-कुटीर-कुट विहित शारदाम्भोधर-विडम्बन: निरपराध-भारताभिजन-जन-पीडन-पातक-पटलैरिव समुद्धूयमाननीलध्वजैरुपलक्षित:।'

दूसरी ओर व्यास जी की लघुसमास शैली भी अत्यन्त भावपूर्ण और मार्मिक है। उसमें अभिव्यक्ति की स्पष्टता और सूक्ष्मता निहित है-

'एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य, कुण्डलमाखण्डलदिश:, दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविमोक: कोकलोकस्य, अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधार: सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य।'

व्यास जी की इस रचना में समासरहित सुन्दर पदावलियों का प्रयोग भी अत्यन्त हृद्य है-

'बटुरसौ आकृत्या सुन्दर:, वर्णेन गौर:, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीय:, कम्बुकण्ठ:, आयतललाट:, सुबाहुर्विशाललोचनश्चासीत्।'

अम्बिकादत्त व्यास विद्वान् थे, भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था और भावाभिव्यक्ति की पूर्ण क्षमता थी। भाव के अनुकूल भाषा का संयोजन करने का ध्यान सदैव रखते थे। जैसा कोमल या कठोर भाव का वर्णन करना होता था, उसी के अनुसार भाषा संयोजन करते थे। शान्त, स्निग्ध एवं नीरव निशा का वर्णन देखिये-

'धीरसमीरस्पर्शेन मन्दमन्दमान्दोल्यमानासु व्रत्तिषु, समुदिते यामिनी-कामिनी चन्दनविन्दौ इव इन्दौ, कौमुदीकपटेन सुधाधारमिव वर्षति गगने, अस्मन्नीतिवार्ताशुश्रूषुषु इव मौनमाकलयत्सु पतंगकुलेषु कैरवविकासहर्षप्रकाश मुखरेषु चञ्चरीकेषु।'

भावों की सरल एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिये उनकी भाषा द्रष्टव्य है-

'क्वचिद् हरिद्रा हरिद्रा, लशुनं लशुनम्, मरिचं मरिचम्, चुक्रं चुक्रम्, वितुन्नकं वितुन्नकम्, शृंगवेरं शृंगवेरम्, रामहं रामहम्, मत्स्यण्डी मत्स्यण्डी, मत्स्या मत्स्याः,कुक्कुटाण्डं कुक्कुटाण्डम्, पललं पललमिति-'

अस्तु, इस कृति के अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि कवि ने भाषा और शैली का प्रयोग भाव के अनुसार ही किया है। यत्र-तत्र व्याकरणिक शब्दों का भी प्रयोग उनकी विद्वत्ता की ओर संकेत करता है। सन्नन्त, यङन्त यङ्लुङन्त शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। उनकी भाषाशैली उनके काव्य को उत्कृष्टता प्रदान करने में पूर्णतः उपजीव्य है।

1.2.2 अलङ्कार योजना-

कविताकामिनी का शृङ्गार है- अलङ्कार योजना। जिस प्रकार आभूषण से नारी का सौन्दर्य बढ़ जाता है, उसी प्रकार अलङ्कार से काव्य का भी चमत्कार एवं हृदय संवेद्यता बढ़ जाती है। अनलंकृत भाषा एवं रमणी दोनों चित्ताकर्षक नहीं होते। कुछ अर्थालङ्कार तो इतने महत्त्वपूर्ण हैं कि उनके विधान से काव्य के सर्वस्व वे ही प्रतीत होने लगते हैं। इसी कारण तो कुछ अलङ्कारवादियों ने अलङ्कार को ही काव्य की आत्मा मानना प्रारम्भ कर दिया। कुछ भी हो काव्य में अलङ्कार का स्थान महत्त्वपूर्ण है। अलङ्कार के अभाव में काव्य अपनी पूर्णता को प्राप्त करने में कभी भी समर्थ नहीं हो सकता।

पं. अम्बिकादत्त व्यास ने अपनी सुरभारती को एक सुन्दर रमणी की भाँति अलङ्कार से सजाया है। अनुकूल एवं समुचित अलङ्कार का संयोजन किया है। बाण की कृति अलङ्कार के भार से बोझिल हुई प्रतीत होती है किन्तु व्यास की कृति विरलालङ्कार विभूषिता लावण्यमयी तन्वंगी के समान है। उन्होंने शब्दालङ्कार और अर्थालङ्कार दोनों का सावसर प्रयोग किया है। शब्दालङ्कार तो पदे पदे दृष्टिगोचर होता है। अनुप्रास अलङ्कार का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

'भामिनी भ्रूभङ्गभूरिभावप्रभावपराभूतवैभवेषु भटेषु'
'चञ्चच्चन्द्रहासचमत्कारचाकचक्यचिल्लीभूतचक्षुषका'।
'चञ्चच्चाकचिक्यचकितीकृतावलोचकलोचननिचयां,'
'महाघण्टां प्रसह्य संगृह्य'

यत्र-तत्र यमक का भी प्रयोग किया है-

'विलक्षणोऽयं भगवान् सकलकलाकलापकलनः सकलकालनः करालः कालः।'

कवि की कल्पना का बहुत बड़ा सम्बल है-**उत्प्रेक्षा** अलङ्कार। बाण की तरह व्यास जी ने भी उत्प्रेक्षा की पर्याप्त संयोजना की है। एक मालोत्प्रेक्षा का उदाहरण द्रष्टव्य है-

'गगनसागरमीने इव, मनोजमनोज्ञहंसे इव, विरहिनिवकृन्तेन रौप्यकुन्त प्रान्ते इव, पुण्डरीकाक्ष-पत्नीकरपुण्डरीकपत्रे इव, शारदाभ्रसारे इव सप्तसप्ति सप्तिपादच्युते राजतखुरत्रे इव मनोहरतामहिला ललाटे इव, कन्दर्पकीर्तिलताङ्कुरे इव, प्रजाजननयनकर्पूरखण्डे इव, तमीतिमिरकर्तनशाणोल्लीढनिस्त्रिंशे इव च समुदिते चन्द्रखण्डे'।

'उपमा' अलङ्कारों में प्रमुख माना जाता है क्योंकि उपमा एक प्रकार से वक्तव्य के कहने का ढङ्ग है, जिसका व्यवहार सर्वाधिक होता है। साधर्म्य अलङ्कारों की माला में उपमा 'सुमेरु' है। उपमा का प्रयोग भी व्यास

जी ने बड़े सरल तथा स्वाभाविक ढङ्ग से किया है-

'सेयं वर्णेन सुवर्णम् कलरवेण पुंस्कोकिलान्, केशैः रोलम्बकदम्बान्, ललाटेन कलाधरकलाम् लोचनाभ्याम् खञ्जनान्, अधरेण बन्धुजीवम्, हासेन ज्योत्स्नाम्'।

व्यास जी ने परम्परा से हटकर नये उपमानों का भी प्रयोग किया है, जैसा कि संस्कृत कवियों में प्राय: नहीं देखा जाता है। कवि ने नौका की उपमा एक कुम्भड़े की फांक से देते हुए लिखा है- 'कुष्माण्डफक्किकारया नौकया'।

विरोधाभास व्यास जी का प्रिय अलङ्कार है। विरोधाभास के चित्रण में कवि, बाण की समानता करता हुआ दिखाई पड़ता है। शिवाजी के वर्णन में विरोधाभास की छटा बरवश पाठकों को आकृष्ट करती है-

'खर्वामप्यखर्वपराक्रमाम् श्याममपि यशः समूहश्वेतीकृतत्रिभुवनाम्, कुशासनाश्रयामपि सुशासनाश्रयाम्, पठनपाठनादि परिश्रमानभिज्ञामपि नीतिनिष्णाताम् स्थूलदर्शनामपि सूक्ष्मदर्शनाम्, ध्वंसकाण्डव्यसनिनीमपि धर्मधौरेयीम्, कठिनामपि कोमलाम्, उग्रामपि शान्ताम् शोभितविग्रहामपि दृढसन्धिबन्धाम्, कलितगौरवामपि कलितलाघवाम्..... ।'

'क्षत्रियकुलाङ्गनाः कमला इव कमला, शारदा इव विशारदा, अनुसूया इवानुसूयाः, यशोदा इव यशोदाः, सत्या इव सत्याः, रुक्मिण्य इव रुक्मिण्यः, सुवर्णा इव सुवर्णाः, सत्य इव सत्यः।'

इसके अतिरिक्त दीपक, श्ल ेष, उदात्त, यथासंख्य आदि अलङ्कारों की भी योजना की है। डॉ० भगवानदास कादम्बरी से तुलना करते हुए लिखते हैं- 'जहाँ वासवदत्ता और कादम्बरी के शब्दों की अरण्यानी में बेचारा अर्थ पथिक सर्वथा भूल भटक कर खो जाता है; उसका पता नहीं लगता, वहाँ शिवराजविजय के सुललित उद्यान में, उसकी सहज अलंकृत शैली में पाठक का मन खूब रमता है कादम्बरी के शब्दों की विकट अरण्यानी की तरह शिवराजविजय केशब्दसंसार को देखकर उसका मन घबरा नहीं उठता अपितु उसमें प्रविष्ट होकर उसके आनन्द को लेने की उत्सुकता को जगाता है।

अस्तु, व्यास जी ने अलङ्कारों का प्रयोग मात्र कविताकामिनी को सजाने के लिये ही किया है।

1.2.3 रस-योजना-

'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' के अनुसार रस ही काव्य की आत्मा है। यह सच भी है कि रसहीन काव्य नहीं हो सकता है। अत: काव्य में रसयोजना होती ही है। यद्यपि रसों में उच्चावचता या श्रेणी विभाग नहीं होता है तथापि वर्ण्य की दृष्टि से रस की मुख्यता या गौणता अवश्य होती है।

शिवराजविजय का प्रधान रस है 'वीर'। प्राय: अन्य सभी रस इसमें उपकारी रूप में निहित हैं। उद्देश्य के अनुसार इसमें वीर रस का विशेष रूप से चित्रण किया है। शिवाजी के शौर्य का जो अद्‌भुत वर्णन किया गया है, वह अत्यन्त स्पृहणीय है। गौरसिंह अफजलखाँ से कहता है-

'को नामापरः शिववीरात् ? स एव राजनीतौ निष्णातः, स एव सैन्धवारोहविद्यासिन्धुः, स एव चन्द्रहासचालने चतुरः, स एव मल्लविद्यामर्मज्ञः, स एव वाणविद्यावारिधिः, स एव वीरवारवरः पुरुषपौरुषपरीक्षकः, स एव दीनदुखदावदहनः, स एव स्वधर्मरक्षणसक्षणः।'

'आगत एष शिववीरः इति भ्रमेणापि सम्भाव्य अस्य विरोधिषु 'केचन मूर्च्छिताः निपतन्ति, अन्ये विस्मृतशास्त्रास्त्राः पलायन्ते, इतरे महात्रासाकुञ्चितोदरा विशिथिलवाससो नग्ना भवन्ति, अपरे च शुष्कमुखा दशनेषु तृणं सन्धाय साम्रेडे प्रणिपातपरम्परां रचयन्तो जीवनं याचन्ते।'

व्यास जी ने यत्र तत्र शृङ्गार रस का भी चित्रण किया है। इन्होंने शृङ्गार का वर्णन अत्यन्त शिष्ट और सात्विक रूप में किया है, उसमें मादकता या उच्छृँखलता लेषमात्र की नहीं है–

'सा चावलोक्य तमेव पूर्वावलोकितं युवानम्, वीराभरमन्थरापि ताताज्ञया बलादिवप्रेरिता ग्रीवां नमयन्ती' आत्मनाऽऽत्मन्येव निविशमाना स्वपादाग्रमेवालोकयन्ती मोदकभाजनसमजितं सव्येतरकरं तदग्रेप्रसारयत्।`````पुनश्च सा अञ्चलकोणं कटिकच्छप्रान्ते आयोज्य, हस्ताभ्यां मालिकां विस्तार्य नतकन्धरस्य रघुवीरसिंहस्य ग्रीवायां चिक्षेप ईषत्कम्पितगात्रयष्टिश्च शनैर्यथा निववृते।'

कहीं–कहीं करुण रस का अत्यन्त हृदयग्राही वर्णन किया गया है–

'माता च तव ततोऽपि पूर्वमेव कथावशेषा संवृता, यमलौ भ्रातरौ च तव द्वादशवर्षदेशीयावेव आखेट व्यसनिनौ महार्हभूषणभूषितौ तुरगावरुह्य वनं गतौ दस्युभिरपहृतौ इति न श्रूयते तयोर्वार्ताऽपि, त्वं तु मम यजमानतस्य पुत्रीति स्वपुत्रीव्मयैव सह नीता वर्द्धयसे च। अहह!`````````वारंवारम् बालैव सुन्दरकन्याविक्रयव्यसनिभिर्यवनवराकैरपह्रियसे।'

व्यास जी ने एकत्र वात्सल्य रस का भी अत्यन्त हृदयग्राही वर्णन किया है। डाकुओं के चंगुल में फंसे हुए गौरसिंह और श्यामसिंह अपनी भगिनी के विषय में सोचते हैं–

'हन्त! हत भाग्या सा बालिका, या अस्मिन्नेव वयसि पितृभ्यां परित्यक्ता, आवयवोरपि अदर्शनेन क्रन्दनैः कदर्थयति। अहह! सततमस्मत्क्रोडैकक्रीडनिकाम्, सततमस्मन्मुखचन्द्रचकोरीम्, सततमस्मत् कण्ठरत्नमालाम् सततमस्मन्सह भोजनीम्`````` '

इस प्रकार पं० अम्बिकादत्त व्यास के द्वारा रसों की योजना अत्यन्त परिपक्व और साधिकार है, मुख्यतः वीररस का चित्रण करते समय इसमें सभी रस वर्णन यत्किञ्चिद् रूप में उपलब्ध होते हैं।

1.3 प्रथमनिश्वासानुसार तत्कालीन भारतवर्ष की दशा का वर्णन

संस्कृत गद्य काव्य में गद्य की अनेक विधाएँ निहित हैं और विविध भावों के वर्णन का भी समन्वय है। किन्तु शिवराजविजय के पूर्व जिन आख्यानों या कथाओं का वर्णन मिलता है, वे या तो चरित्र प्रधान हैं या दृश्य (बिम्ब) प्रधान। शिवराजविजय एकमात्र ऐसा उपन्यास है, जिसमें तत्कालीन भारतवर्ष की परिस्थितियों और चरित्रों का समग्र रूप से वर्णन किया गया है। 'साहित्य समाज का दर्पण होता है' शिवराजविजय इस कथन की कसौटी पर खरा उतरता है।

पण्डित अम्बिकादत्त व्यास ने शिवराजविजय में मुगलकालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया है। उस समय राजा अकर्मण्य विलासी और विद्वेषी थे। हिन्दू जाति मुसलमानों के अत्याचार से पीडित थी। दूसरी ओर मुसलमानों का साम्राज्य भारत में निरन्तर बढ़ता जा रहा था और उसके साथ–साथ ही मुसलमान हिन्दू कन्याओं के अपहरण और मूर्तियों के विध्वंस, पवित्र धर्म ग्रन्थों के विनाश और अनाथ हिन्दूओं के प्रपीडन को अपना कर्तव्य समझते थे। हिन्दू राजा मुसलमान शासकों की दासता स्वीकार कर उनकी प्रशंसा में रत थे और उनकी कृपा पर जीवित थे।

ऐसी विषम परिस्थिति में महाराष्ट्राधीश्वर वीर शिवाजी ने अपने शौर्य, पराक्रम और सदाचरण द्वारा हिन्दू जनता और हिन्दूत्व की रक्षा की तथा हिन्दूओं के अस्तंगत शौर्य को बड़ी कुशलता और वीरता से पुनर्जागृत किया। उन्होंने देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति आत्मविश्वास, स्वधर्मानुराग एवम् मातृभूमि की सेवा–भाव का हिन्दू जनता में सञ्चार किया।

अति अनीति की पराजय सर्वदा होती है। जिस विलासिता और व्यसन के कारण हिन्दू राजाओं का पतन हुआ उसी विलास और भोगप्राचुर्य के कारण मुस्लिम शासकों का भी पराभव हुआ। हिन्दूओं पर उनका अत्याचार अपनी चरम

सीमा पर पहुँच चुका था। उनके अत्याचारों का वर्णन करते हुए व्यास जी कहते है–

'... क्वचिद्दारा अपह्रियन्ते, क्वचिद्धनानि लुण्ठयन्ते, क्वचिदार्तनादाः, क्वचिद्रुधिरधाराः, क्वचिदग्निदाहः, श्रूयते अवलोक्यते च परितः।'

मुसलमान शासक इतने मदान्वित और विलासी प्रवृत्ति के हो चुके थे कि अफजल खाँ भी जो वीर शिवाजी जैसे शक्तिशाली और सर्वसमर्थ राजा को पराजित करने की प्रतिज्ञा विजयपुर नरेश के सामने करके आया था, सदैव भोग विलास और नशे में चूर रहता था। जिसका वर्णन करते हुये व्यास जी कहते हैं–

'सप्रौढ़ि विजयपुराधीशमहासभायां प्रतिज्ञाय समायातोऽपि शिवप्रतापञ्च विदन्नपि अद्य नृत्यम्, अद्य लास्यम्, अद्य सद्यम्, अद्य वाराङ्गना, अद्य भ्रुकुंसकः, अद्य वीणावादनम् इति स्वच्छन्दै–रुच्छृङ्खलाचरणैर्दिनानि गमयतिङ्क'

इसी का परिणाम था कि गायक (गौरसिंह) के समक्ष अफजल खाँ सगर्व अपनी भावी गोप्य योजना (शिववीर को सन्धिव्याज से पकड़ने) की घोषणा स्पष्ट रूप से कर देता है। इस प्रकार तत्कालीन मुस्लिम राजाओं में उसी वृत्ति का सञ्चार हो रहा था जिसके कारण हिन्दू राजाओं की पराजय हुई थी। उस समय हिन्दू राजाओं में आपसी वैरभाव बढ़ा हुआ था, वेश्याओं और मदिरा के चक्कर में अपनी सम्पत्ति नष्ट कर चुके थे, मिथ्या प्रशंसा करने वाले चाटुकारों को ही सबसे निकट और हितैषी समझते थे और स्वार्थ की वृत्ति सर्वोपरि हो चुकी थी। इसी कारण तो भारतवर्ष सैकड़ों वर्ष तक पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा रहा। इसका वर्णन करते हुए व्यास जी कहते हैं।

'शनैः शनैः पारस्परिक विरोध–विशिथिलीकृत–स्नेहबन्धनेषु राजसु, भामिनी भ्रूभङ्ग–भूरिभाव–प्रभाव–पराभूतवैभवेषु भटेषु, स्वार्थचिन्तासन्तानवितानैकतानेषु अमात्यवर्गेषु प्रशंसामात्रप्रियेषु प्रभुषु'। 'इन्द्रस्त्वं कुबेरस्त्वं वरुणस्त्वमिति वर्णनमात्रसक्तेषु।'

किन्तु महाराष्ट्राधीश्वर, वीर शिवाजी उन हिन्दू राजाओं में अपवाद रूप थे; न तो उनमें उक्त प्रकार की कमजोरी थी और न ही स्वार्थलिप्सा। वे एक वीर, पराक्रमी, राजनीति–पारंगत एवं कुशल प्रशासक थे। उनकी क्षमता, व्यूहरचना, ओजस्विता एवं धीरता अपूर्व थी। इसी कारण विशाल सेना वाले मुस्लिम शासक के विरुद्ध उन्होंने विजय प्राप्त की। उनके गुप्तचर गौरसिंह द्वारा उसका वर्णन करते हुए कहता है–

'भगवन्! सर्वं सुसिद्धम्, प्रतिगव्यूत्यन्तरालमङ्गीकृतसनातनधर्मरक्षामहाव्रतानां धारितमुनिवेषाणां वीरवराणामाश्रमाः सन्ति। प्रत्याश्रमञ्च वलीकेषु गोपयित्वा स्थापिताः परश्शताः खड्गाः, पटलेषु तिरोभाविता शक्तयः कुशपुञ्जान्तः स्थापिताः भुशुण्डयश्च समुल्लसन्ति। उञ्छस्य शिलस्य, समिदाहरणस्य, इङ्गुदीपर्यन्वेषणस्य, भूर्जपत्रपरिमार्गणस्य, कुसुमावचयनस्य तीर्थाटनस्य सत्सङ्गस्य च व्याजेन केचन जटिलाः, परे मुण्डिनः इतरे काषायिणः, अन्ये मौनिनः, अपरे ब्रह्मचारिणश्च बहवः पटवो वटवश्चराः, सञ्चरन्ति। विजयपुरादुड्डीयात्रागच्छन्त्या मक्षिकाया अप्यन्तः स्थितं वयं विद्मः, किं नाम एषां यवन–हतकानाम्।'

वीर शिवाजी सदैव योग्य और विश्वस्त व्यक्ति को ही गुप्तचर के रूप में नियुक्त करते थे। गुप्तचर की निपुणता, कार्यक्षमता, विश्वसनीयता और गम्भीरता आदि की परीक्षा लेने के बाद ही राजपक्ष के लोग गुप्तचरों को रहस्य की बातें बताते थे, केवल गुप्तचर होने मात्र से न तो उनकी सन्तुष्टि हो पाती थी और न ही वे उन्हें गुप्त सन्देशों के कहने योग्य समझते थे। तोरण दुर्ग का अध्यक्ष शिवाजी के गुप्तचर की परीक्षा लेकर ही उसे रहस्य की बात बताने के लिये तैयार होता है–

'नैतेषु विषयेषु कदापि सतन्द्रोऽवतिष्ठते महाराजः, स सदा योग्यमेव जनं पदेषु नियुनक्ति, नूनं बालोप्येषोऽबालहृदयोऽस्ति, तदस्मै कथयिष्याम्यखिलं वृतान्तम्, पत्रं च केषुचिद् विषयेषु समर्पयिष्यामि।'

गौरसिंह गुप्तचर का कार्य करते हुये कभी ब्रह्मचारी बनता है तो, कभी संन्यासी; कभी गायक बनता है तो कभी उत्कट योद्धा । और सर्वत्र अपना कार्य बड़ी कुशलता से करता है। दूसरी ओर शिवाजी के द्वारा नियुक्त सभी कर्मचारी अपना कार्य अत्यन्त निष्ठा विश्वास और स्वामिहित भावना से करते थे। वे किसी के बहकावे या उत्कोच आदि के प्रलोभन में नहीं आते थे। स्वामी की आज्ञा के सामने ब्रह्मा तक के आदेश मानने को तैयार नहीं होते थे। स्वामी का आदेश ही उनके लिये ब्रह्मा का आदेश होता था। इसी प्रकार के आचरण की एक द्वारपाल की उक्ति द्रष्टव्य है–

'संन्यासिन्! संन्यासिन्! ! बहूक्तम्, विरम न वयं दौवारिका ब्रह्मणोप्याज्ञां प्रतीक्षामहे। किन्तु यो वैदिकधर्मरक्षाव्रती, यश्च संन्यासिनां ब्रह्मचारिणां तपस्विनाञ्च, संन्यासस्य ब्रह्मचर्यस्य तपसश्चान्तरायाणां हन्ता, येन च वीरप्रसविनीयमुच्यते कोङ्कणदेशभूमिः तस्यैव महाराजशिववीरस्याऽऽज्ञां वयं शिरसा वहामः।'

महाराज शिवाजी एक स्वाभिमानी शासक थे। अपने शत्रु मुगल शासको से सन्धि करना या उनकी अधीनता स्वीकार करना उन्हें स्वीकार न था। इस स्थिति में शत्रुओं से रक्षा का एकमात्र उपाय युद्ध ही था। शत्रु से सन्धि करने की अपेक्षा अपने प्राणों को उत्सर्ग कर देना वे कहीं अधिक श्रेयष्कर समझते थे। अपने इन विचारों पर सदैव दृढ़ रहे। शिवाजी के हृदय में यवनों से प्रतिशोध लेने की भावना कितनी प्रबल थी इसका एक सुन्दर उदाहरण देखिये–

'ये अस्मादिष्टदेव मूर्तीभङ्क्त्वा मन्दिराणि समुन्मूल्य तीर्थस्थानानि पङ्कणी कृत्य, पुराणानि पिष्ट्वा वेद पुस्तकानि विदीर्य च आर्यवंशीयान् वलाद्यवनी–कुर्वन्ति; तेषामेव चरणयोरञ्जलिं बद्ध्वा लालाटिकतामङ्गी कुर्याम्? एवं चेद् धिक् मां कुलकलङ्कक्लीबम्। या प्राणभयेन सनातनधर्मद्वेषिणां दासे ता वहेत्। यदि चाहमाहवे म्रियेय, बध्येय, ताडयेय वा तदैव धन्योऽहम् धन्यौ च मम पितरौ। कथ्यतां भावदृशां विदुषामत्र कः सम्मतिः?'

इस प्रकार व्यास जी ने तत्कालीन भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का सम्यक् चित्रण किया है। जिससे 'साहित्य समाज का दर्पण होता है' कि उक्ति पूर्णतः चरितार्थ होती है।

1.4 पात्र चरित्र–चित्रण –

उपन्यास में चरित्र–चित्रण का विशेष स्थान होता है। काव्य की सफलता अधिकांश रूप में चरित्र–चित्रण पर निर्भर होती है। पण्डित अम्बिकादत्त व्यास अपने शिवराजविजय में सभी पात्रों के चरित्राङ्कन में विशेष सफल हुए हैं। उनके सभी पात्र जीवन्त एवं प्रभावी हैं। व्यास जी के चरित्रांकन की विशेषता यह रही है कि जिसे जैसा होना चाहिए, उसे वैसा ही वर्णित किया है; जबकि बाण ने 'भवितव्य' का बहुत अधिक बढ़ा–चढ़ाकर चित्रण किया है। अतः बाण जैसी अस्वाभाविकता व्यास जी के चित्रण में नहीं है। इनके सभी पात्रों का चित्रण अत्यन्त स्वाभाविक है।

आश्रमवासी ब्रह्मचारी गुरु, गौरबटु तथा योगिराज आदि का वर्णन अत्यन्त सरल एवं स्पष्ट है। महाराष्ट्र केसरी वीर शिवाजी रघुवीर सिंह तथा अफजल खाँ आदि के चित्रण में व्यासजी ने अत्यन्त वास्तविकता और स्वाभाविकता का आश्रम लिया है, कहीं पर भी कृत्रिमता का पुट नहीं है। जो जैसा था उसका वैसा ही चित्रण किया। यही उनकी विशेषता है।

1.4.1 वीर शिवाजी

वीर शिवाजी स्वधर्म रक्षा के व्रती राजनीति में निष्णात तथा भारतीय आदर्शों और संस्कृति के प्रतिनिधि हैं। सनातन धर्म की रक्षा के लिये अपने प्राणों की बाजी लगाने को तैयार रहते थे। उनका शौर्य, पराक्रम देखिये – **'कथं वा आगत एषः शिववीरः इति भ्रमेणापि सम्भाव्य अस्य विरोधिषु केचन मूर्च्छिता निपतन्ति, अन्ये विस्मृतशस्त्रास्त्राः पलायन्ते, इतरे महात्रासाकुञ्चितोदरा विशिथिलवाससो नग्रा भवन्ति अपरे च शुष्कमुखा दशनेषु तृणं सन्धाय साम्रेडं प्रणिपातपरम्परां रचयन्तो जीवनं याचन्ते।'**

शिववीर में अपने देश के प्रति प्रेम था, गर्व था। उसकी रक्षा के लिये प्राणपण से सन्नद्ध रहते थे। इस भावना का अत्यन्त सुन्दर चित्रण व्यास जी ने किया है–

'शिववीरः– भारतवर्षीया यूयम्, तत्रापि महोच्चकुलजाताः, अस्ति चेदं भारतवर्षम् भवति च स्वाभाविक एवानुरागः सर्वस्यापि स्वदेशे, पवित्रतमश्च यौष्माकीणः सनातनो धर्मः, तमेते जाल्मा समूलमुच्छिन्दन्ति। अस्ति च 'प्राणाः यान्तु न च धर्मः' इत्यार्याणां दृढ़ः सिद्धान्तः।'

1.4.2 अफजल खाँ

दूसरी ओर मुगल शासकों की परम्पराओं से घिरे हुए सेनापति अफजल खाँ का चरित्र स्वाभाविक तथा सत्य रूप में चित्रित किया है। अन्य शासकों के समान वह भी विलासी, अदूरदर्शी, आत्मश्लाघी तथा सूक्ष्म राजनीतिक कलाबाजियों से अनभिज्ञ है। व्यास जी ने उसके चरित्र को अत्यन्त रोचक ढंग से चित्रित किया है। वह मद के वशीभूत हुआ अपनी योजना को गोप्य नहीं रख पाता और कह उठता है–

'इति कथयति तानरङ्ग, अभिमान परवशः स स्वसहचरान् सम्बोध्य पुनरादिशत् भो भो योद्धारः! सूर्योदयात् प्रागेव भवन्तः पञ्चापि सहस्त्राणि सादिनां दशापि च सहस्त्राणि पत्तीनं सज्जीकृत्य युद्धाय तिष्ठत। गोपीनाथपण्डित द्वारा ऽऽहूतोस्ति मया शिव वराकः। तद् यदि विश्वस्य स समागच्छेत्, ततस्तु बद्ध्वा जीवन्तं नेष्यामः, अन्यथा तु सदुर्गमेनं धूलीकरिष्यामः।

व्यास जी ने अफजल खाँ के सैनिकों की कायरता, भयाकुलता तथा अत्याचारों को भी ऐतिहासिक तथ्यों के अनुकूल काव्यात्मक ढङ्ग से चित्रित किया है–

'वयं बलिनः आस्माकीना महती सेना, तथाऽपि न जानीमः किमिति कम्पत इव क्षुभ्यतीव च हृदयम्!यवनानां पराजयो भविष्यति अफजलखानो विनङ्क्ष्यति न विद्मः को जपतीव कर्णे, लिखतीव सम्मुखे, क्षिपतीव चान्तःकरणे।'

1.4.3 गौर सिंह

शिवाजी के लिये गुप्तचर का कार्य करने वाला, गौरसिंह अच्छा सुभट है, राजनीति में प्रवीण है, योद्धाओं में अग्रणी है, वेष–परिवर्तन में निपुण है तथा अपने कार्य में दृढ़, अनालस एवं सतत सजग है। गौरसिंह वीरता के साथ अपहृत बालिका को यवनों से छीनता है, बड़े चातुर्य से शिववीर के द्वारपाल की परीक्षा करता है तथा अफजल खाँ के शिविर में जाकर बड़ी पटुता से उसकी भावी योजना की जानकारी करता है और शिवाजी की प्रशंसा भी कर आता है। शिवाजी के दिये गये कार्य का बड़ी बुद्धिमत्ता से सम्पादन करता है। दो–दो कोस की दूरी पर आश्रमों की स्थापना तथा विविध वेषधारी तपस्वियों के माध्यम से औरङ्गजेब तथा उसके सेनापति की प्रत्येक गतिविधियों की जानकारी कर लेता है, जिससे उसकी राजनीतिक चेतना का परिचय मिलता है।

अन्य जितने भी उपन्यास के पात्र हैं, उन सभी का चरित्र व्यास जी ने अपनी प्रातिभ लेखनी से अत्यन्त जीवन्त रूप में चित्रित किया है। न कहीं न्यूनता है, न कहीं अधिकता; न कहीं स्वाभाविकता का अभाव है और न कहीं कृत्रिमता का आधान।

इस प्रकार पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का शिवराजविजय वर्ण्य पात्रों के चरित्राङ्कन तथा विषयवस्तु की दृष्टि से अपनी काव्यात्मक विधा पर खरा उतरता है। और निश्चित रूप से संस्कृत गद्य साहित्य में उसका अपना एक विशिष्ट

स्थान है, जो अन्य किसी काव्य को प्राप्त नहीं है। इस ऐतिहासिक उपन्यास की अपनी निजी विशेषतायें हैं, जो उसको उत्कृष्टता के शिखर पर पहुँचा देती हैं। शिवराजविजय भारतीय गौरव, संस्कृत-भाषा-वैशिष्ट्य तथा कवि के उत्कृष्ट कवित्व का प्रतीक है।

1.5 बोधप्रश्न -

(1) शैली या रीति के चार भेद लिखिये।

(2) 'शिवराजविजय' को किस प्रकार का काव्य माना गया है?

(3) 'शिवराजविजय' के किन्हीं पाँच चरित्रों (पात्रों) के नाम लिखें।

(4) शिवराजविजय में भारतवर्ष की कौन से ऐतिहासिक कालखण्ड की दशा का यथार्थ चित्रण किया गया है?

(5) अतिसंक्षेप में गौरसिंह का चरित्र-वर्णन कीजिये।

1.6 उपयोगी पुस्तकें -

(1) शिवराजविजय (1-2 निश्वास) - चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।

(2) संस्कृत साहित्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर।

(3) संस्कृत साहित्य की रूपरेखा, चन्द्रशेखर पाण्डेय तथा नानूराम व्यास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

(4) संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

(1) द्रष्टव्य 1.2.1 में।

(2) द्रष्टव्य 1.1 में।

(3) द्रष्टव्य 1.4 में।

(4) द्रष्टव्य 1.3 में।

(5) द्रष्टव्य 1.4 में।